दौड़ पूरी करने की अपील
(2 तीमुथियुस 4)

''पर तू सब बातों में सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर'' (2 तीमुथियुस 4:5)।

पौलुस जैसे आदर्श अगुवे (1 कुरिन्थियों 11:1) को जब पता चलता है कि अनन्तकाल में जाने के लिए उसका जीवन चरम तक पहुंच गया है, तो पूरी सामर्थ के साथ हर बात को पूरा करने की उसकी इच्छा बढ़ गई। निश्चय ही इस पत्र को बन्द करते हुए पौलुस को एक विशेष जिज़्मेदारी का अहसास था।

अध्याय 4 का आरज़्भ एक आज्ञा से होता है, और पौलुस उस आज्ञा के कई कारण बताता है (4:1-8)। अपने जाने का समय निकट होने के कारण तीव्र भावनाओं से, उसमें अपने प्रिय तीमुथियुस की संगति की लालसा थी (4:9-13)। परन्तु क्रूस के इस बूढ़े सिपाही का विश्वास ठण्डा नहीं पड़ा। पौलुस यही चाहता था कि तीमुथियुस को यह समझ आ जाए कि संकट की इन घड़ियों में भी उसका भरोसा टूटा नहीं था। यहां पौलुस ने संकट की घड़ी में भी विजय पाने की सबसे महत्वपूर्ण बात कही (4:18)। अध्याय 4 में महत्वपूर्ण निर्णायक टिप्पणियों में व्यज़्ति और बिनतियां दोनों हैं जिनसे तीमुथियुस का हृदय पिघल गया होगा (4:19-22)।

पाठ 10: मानने के लिए एक आज्ञा (4:1-8)

पौलुस ने अपनी ''आज्ञा'' *नकारात्मक* परिप्रेक्ष्य से जारी करते हुए तीमुथियुस को दिखाया था कि अन्त के दिनों में लोग मूर्खता और असफलता के पीछे भागेंगे (3:1-9)। *सकारात्मक* परिप्रेक्ष्य से पौलुस ने तीमुथियुस को ध्यान दिलाया कि उसे ''हर एक भले काम के लिए'' तैयार किया गया था (3:10-17)।

पौलुस ने तीमुथियुस को ''मैं तुझे चिताता हूं'' कहते हुए आरज़्भ किया (4:1ख)। स्पष्टतया, फिर तीमुथियुस को यह जताने के लिए कि वह उन बातों को मानने के विषय में कितना गंभीर है पौलुस ने शज़्दों और ईश्वरीय व्यज़्तित्वों का चयन किया। सुसमाचार प्रचारक, तुज़्हारे लिए सुनने का, *यही समय है*!

आज्ञा की उपयुज़्तता (आयत 1)

पौलुस ने ईश्वरीय व्यज़्तित्वों और प्राथमिकताओं का इस्तेमाल करते हुए अपनी आज्ञा की प्रासंगिकता समझाई। पहली बात तो यह थी कि यह आज्ञा ''परमेश्वर ... को गवाह करके'' (4:1) की गई थी जो यहोवा, सर्वशज़्तिमान, आकाश और पृथ्वी का परमेश्वर है। तीमुथियुस को मालूम था कि परमेश्वर को गवाह मानकर दिया गया कोई भी संदेश पूरे ध्यान से सुनकर, समझकर, जहां आवश्यकता पड़े लागू करना और पूरे समर्पित मन से दूसरों को बताया जाना आवश्यक है।

परन्तु, पौलुस की आज्ञा में ''मसीह यीशु'' भी था। उसके गुण भी भयभीत करने वाले हैं। आयत 1 के संदर्भ में उसका सज़्बन्ध तीन घटनाओं से जोड़ा गया है:

1. चरम वाला क्षण: जिसमें मसीह ने ''जीवतों और मरे हुओं का न्याय करना है।'' वह उसका अधिकार है, और उसके पास इसे करने के औजार हैं (यूहन्ना 12:48; इब्रानियों 4:12, 13; प्रकाशितवाज़्य 2:12; 3:14; 20:11–15)।

2. सबका ध्यान खींचने वाला प्रताप: मसीह प्रकट होगा। पौलुस ने लिखा, ''ज़्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शज़्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:16, 17)।

विलियम बार्कले ने ''प्रगट होना'' के लिए यूनानी शज़्द के महत्व पर ध्यान दिया[1]:

> सम्राट का किसी भी स्थान पर प्रकट होना उसका *एपिफेनिया* (राज्याभिषेक) ही होता था। स्पष्टतया जब राजा ने कहीं जाना होता था, तो सब कुछ पूरी तरह से ठीक ठाक कर दिया जाता था। गलियों की सफाई करके उन्हें सजाया जाता था; सब काम क्रमबद्ध कर दिया जाता था। नगर को साफ करके सम्राट के *एपिफेनिया* को उपयुज़्त बनाने के लिए सजाया जाता था; सो पौलुस तीमुथियुस से कहता है: ''जब किसी नगर में सम्राट के *एपिफेनिया* की अपेक्षा होती है तो तू जानता है कि ज़्या होता है; *तुझ पर* यीशु मसीह का *एपिफेनिया* आ रहा है। अपना काम इस ढंग से कर कि उसके प्रकट होने के समय सब कुछ तैयार हो।'' मसीही व्यज़्ति जीवन को इस प्रकार क्रमबद्ध करता है जिससे वह मसीह के आने के लिए किसी भी क्षण तैयार हो।[2]

3. मेल का चरम: मसीह अपने ''प्रगट होने और राज्य'' के द्वारा सब लोगों पर प्रकट होगा। ''उसके राज्य'' की अभिव्यज़्ति को शामिल करने का सज़्बन्ध अवश्य ही उसके प्रकट होने और न्याय के समय से है। ऐल्फर्ड मार्शल ने न्याय के सज़्बन्ध में इस वाज़्यांश का इस्तेमाल जीवितों और मरे हुओं ''का न्याय करने वाले'' (यू.: *toumellomtos krinein*) के रूप में किया।[3]

मार्शल ने यूनानी शास्त्र का अनुवाद ठीक ही किया है, परन्तु *यदि* हम इसे क्रमानुसार

के बजाय कालक्रम के अनुसार देखें तो हमारे लिए यह एक समस्या बन जाती है। कालक्रम के अनुसार, यीशु अभी *प्रकट* नहीं हुआ है अर्थात उसने *जीवितों या मरे हुओं का न्याय करना* आरज़्भ नहीं किया है। इसलिए, ''न्याय करना है'' किस अर्थ में उपयुज़्त है? यह क्रम के अनुसार उपयुज़्त है। इब्रानियों 9:27 कहता है, ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुज़्त है।'' हम सब इस बात को जानते हैं कि इब्रानियों के लेखक द्वारा इन शज़्दों को लिखने से लेकर, लाखों लोगों की मृत्यु हो चुकी है पर न्याय अभी तक नहीं हुआ है! कालक्रम के अनुसार, यह बात उलझाने वाली होगी; परन्तु क्रम के अनुसार इसका अर्थ मिलता है। मृत्यु के बाद अगली घटना न्याय ही होगी।

मसीह के आने पर ऐसा ही होगा। जब वह प्रकट होगा तो न्याय भी करेगा (इब्रानियों 10:30; 1 पतरस 4:17; प्रकाशितवाज़्य 20:11-15) और राज्य को लेकर, कलीसिया को अपने लिए (इफिसियों 5:15-27; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12; 4:16-18) और उन आत्माओं (अर्थात राज्य) को पिता को सौंपे। 1 कुरिन्थियों 15:24-28 में हम पढ़ते हैं:

> इस के बाद अन्त होगा; उस समय वह सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ का अन्त करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। ज़्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले लाए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। सब से अन्तिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह मृत्यु है। ज़्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि सब कुछ उसके आधीन कर दिया गया है तो प्रत्यक्ष है, कि जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया; ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।

ये आयतें बड़े स्पष्ट ढंग से इस क्रांतिपूर्ण विचार को स्पष्ट करती हैं जिसमें कुछ लोग कहते हैं कि राज्य अभी नहीं आया है!

पौलुस परमेश्वर की महान योजना को ''समेटने'' के विषय में लिख रहा था जब मसीह प्रकट होगा और हम जो राज्य में हैं उसके उस महिमामय क्षण को अपनी आखों से देखेंगे। पौलुस ने उस अनुकूल समय अर्थात परमेश्वर, मसीह और उसके प्रकट होने की न्याय की घड़ी को ध्यान में रखकर ही तीमुथियुस को आदेश दिया था:

> कि तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, हर प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट, और समझा। ज़्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा - कहानियों पर लगाएंगे। पर तू सब बातों में सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर (4:2-5)।

आज्ञा में योजना और ढंग (आयत 2)

इस आज्ञा की योजना विचार उत्पन्न करने वाली है। संदेश स्पष्ट समझाया गया है। सुसमाचार प्रचारक का काम ''वचन का प्रचार[4]'' करना है। वचन के प्रचार की आवश्यकता पर अत्यधिक ज़ोर देना असज़्भव है। पौलुस ने कहा, ''ज़्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे'' (1 कुरिन्थियों 1:21)।

तीमुथियुस का वचन का प्रचार करने के लिए ''समय और असमय तैयार[5]'' रहना आवश्यक था (4:2)। कोई अगज़्भीर, गैर जिज़्मेदार व्यज़्ति सुसमाचार प्रचारक होने के लिए उपयुज़्त नहीं है।

''समय और असमय'' अभिव्यज़्ति कृषि के लिए इस्तेमाल की जाती है। बीज बोना और फसल काटना मौसम पर निर्भर करता है। पौलुस ज़ोर दे रहा था कि वचन का प्रचार करना मौसम की सीमाओं में नहीं होना चाहिए। तीमुथियुस को सच्चाई का प्रचार करने के लिए हर क्षण ''तैयार'' रहना आवश्यक था।

वचन का प्रचार करने के ढंग से परमेश्वर के संदेश के अलग - अलग लोगों को प्रभावित करने के ढंग का पता चलता है।

1. ''सब प्रकार की सहनशीलता के साथ।'' प्रचार का काम सेवा करने वाले धैर्य से भरे मन वाले होने चाहिए। पौलुस ने ''सब प्रकार की सहनशीलता के साथ'' शिक्षा के साथ उलाहना देने, डांटने और समझाने के लिए कहा। इसलिए प्रचारक का काम धैर्य और सहनशीलता रखते हुए प्रचार करना है।

2. ''शिक्षा।'' प्रचार में शिक्षा के द्वारा स्पष्ट करके समझाया जाता है। इसमें न केवल यह विचार कि सिखाने वाले का सिखाने की कला में सक्षम होना आवश्यक है बल्कि यह भी है कि सिखाते समय मसीह की शिक्षा से जुड़ा होना आवश्यक है!

3. ''उलाहना देना''[6] प्रचार करना कुछ लोगों को सुधारने के लिए होता है। इसके सिद्धांत प्रमाणित सच्चाइयां होते हैं। यह वह माध्यम है जिसके द्वारा किसी के मार्ग को सुधारा जाता है (देखिए 1 पतरस 1:6, 7; रोमियों 3:4)।

4. ''डांट।''[7] यह प्रचार चेतावनी देने के लिए होता है। ''शिक्षा के साथ उलाहना देना'' उस ढंग को दिखाता या ऐलान करता है जो हमें अपनाना चाहिए, जबकि ''डांट'' का अर्थ होगा कि आवश्यकता होने पर दण्ड भी दिया जाए।

5. ''समझा।''[8] इस प्रचार से हमें सही दिशा में जाने की बात समझाई जाती है। ये सुन्दर, व्यापक शज़्द की अलग - अलग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुत सी सज़्भावित प्रासंगिकताएं हैं। एक सुनने वाले के सामने बिनती करनी पड़ सकती है, दूसरे को उत्साह की आवश्यकता हो सकती है, और किसी और को शिक्षा की आवश्यकता हो सकती है। ताड़नाओं के अपने व्यापक क्षेत्र के साथ सुसमाचार इन सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है।

अपने आप को समय - समय पर परखने वाला सुसमाचार प्रचारक अच्छा करेगा। उसे

यह पक्का पता होना चाहिए कि उसके प्रचार में ये सब बातें शामिल हैं और वह एक धीरज वाले आत्मा को प्रकट कर रहा है!

आज्ञा से जुड़ी समस्या (आयतें 3, 4)

तीमुथियुस के लिए वचन का निरन्तर प्रचार करने की आज्ञा थी। पौलुस ने पहले ही देख लिया था कि लोग सच्चाई को पसन्द नहीं करेंगे और उपदेशक जानबूझकर वही बातें बताकर जो सुनने वाले उनसे सुनना चाहेंगे उन पर आभार जताएंगे।

पौलुस की चेतावनी की समीक्षा से इन विद्रोही लोगों की निम्न विशेषताओं का पता चलता है।

वे सच्चाई से दूर हो जाते हैं: ''... लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे।[9]'' यहां खरा उपदेश मनुष्यों को दिया गया है (जैसे पौलुस ने आयत 2 में बिनती की), *परन्तु वे सुधार की इसकी मांग को सह नहीं सकते या स्वीकार नहीं करेंगे या परीक्षाओं को नहीं सहेंगे जो खरी शिक्षा पर स्थिर रहने वालों के लिए आएंगी* (देखिए मत्ती 13:21; 2 तीमुथियुस 3:10–13)।

उनके दूर जाने की स्थिति पर ध्यान दें: ''... वे अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर[10] लेंगे।'' रोनल्ड वार्ड का अवलोकन है:

> वे ''बटोर लेते हैं,'' ऐसा तथ्य है जो उनके संतुष्ट न होने वाली लालसा और नवीनताओं वाली सोच का पता देता है। कोई उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाता और वे ''अगले आदमी'' की सुनने के लिए उसकी ओर हो लेते हैं। *अपने लिए* का अर्थ उनके अपने स्वार्थ के लिए है। उन्हें पता है कि उन्हें क्या चाहिए और उनका उद्देश्य इसे पाना होता है। हर *सिखाने वाला* उन्हें समझा नहीं सकता। उन्हें सिखाने के लिए वही लोग चाहिए जो *उनकी पसन्द के अनुसार हों। सिखाने वाले* मण्डली से मेल खाते हैं।[11]

आज की बहुत सी मण्डलियों में इस प्रवृत्ति की तुलना करना एक चौंकाने वाली बात है। लगता है कि सेवा करने वाले लोग ''म्यूजिकल चेयर''[12] का खेल खेल रहे हैं और विश्वासी लोग सेवकों पर बुड़बुड़ाते हैं। थोड़ी सी ज़ुबान फिसलने या किसी विशेष पाप के विरुद्ध बोलने के कारण मण्डली नया सेवक ढूंढ़ने लगती है। *ऐसा करने वाले सदस्यों से सेवक बनते नहीं बल्कि चलते ही हैं! प्रचार करना शिक्षा से नहीं बल्कि धन मिलने (या न मिलने) से तय होता है!*

इस दृश्य का दूसरा पहलू प्रचारक का प्रभु के संदेश से ''बीमार और स्वार्थी लोगों'' को संतुष्ट करने के लिए जो भी कहना आवश्यक हो, कहने के प्रलोभन में पड़ना है। काम पर बने रहने के लिए वह यही ढंग अपनाता है!

हर सदस्य और हर सुसमाचार प्रचारक को चाहिए कि पौलुस की चेतावनी पर ध्यान दे जिससे वह इस दोहरे पाप का शिकार न हो!

पौलुस ने ऐसे सदस्यों की बात की जो ''कानों की खुजली के कारण'' ऐसा करेंगे।[13] इस

गलती का आधार मानवीय बिनतियों को बनाने की इच्छा, सच्चाई की "अपनी इच्छा के अनुसार" व्याख़्या करना और फिर ऐसे शिक्षकों को ढूंढ़ना है जो वही बताएं जो "मेरे कान सुनना चाहते हैं!" *ऐसी शिक्षा के लिए बदलाव की नहीं केवल अपनी तारीफ की आवश्यकता है।*

ये इच्छाएं अपनी इच्छा पूरी करने वाले लोगों को सच्चाई से, "फेर"[14] देती हैं (4:4)। सच्चाई को त्यागने के बाद, ये लोग "कथा – कहानियों"[15] की ओर कान "लगाएंगे।"[16] *इसमें बीच का कोई स्थान नहीं है जब लोगों को कथा–कहानियां अच्छी लगने लगती हैं तो वे प्रभु के संदेश* को छोड़ देते हैं।

सेवा को पूरा करने का नुस्खा (आयत 5)

जब बहुत से लोग दूसरी पुकारों को सुनेंगे, गलत इच्छाएं पैदा कर लेंगे और सच्चाई से फिर जाएंगे, तो ऐसी स्थिति में पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि उसे अपने मार्ग में कैसे चलना है। फिर पौलुस ने आज्ञाएं देकर अपना उपदेश दिया। उसने तीमुथियुस को ये निर्देश दिए:

"सावधान रह"[17] (4:5)। यूनानी शब्द *nephe* में शांत और स्थिर, अपने आप में काबू रखने वाले विचारवान व्यक्ति का विचार मिलता है। एक ही शब्द में कितने गुणों की चुनौती है! इसमें हैरानी की बात कोई नहीं कि अनुवादकों में मूल यूनानी शब्द का अर्थ देने के लिए इसके साथ "सब बातों में" भी जोड़ दिया।

"दुख उठा[18]।" जो सुसमाचार प्रचारक यह सोचता है कि सब लोग उसे पसन्द करेंगे और सब उसकी मानेंगे वह न केवल भोला है बल्कि पौलुस द्वारा दी गई चेतावनी को भी नज़रअन्दाज कर रहा है कि कठिन समय आएंगे। सुसमाचार प्रचारक की आत्मिक सामर्थ से उसे आवश्यकता पड़ने पर कष्ट सहने के योग्य होना चाहिए।

"सुसमाचार प्रचार का काम कर।"[19] यही वह "काम" (यू.: *poieson*) है जो पौलुस ने तीमुथियुस को और हर सुसमाचार प्रचारक को "करने" की आज्ञा दी। यह शब्द विशेष तौर पर किसी के काम करने या फल देने से जुड़ा है। प्रचारक को इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए और इसकी सम्भाल करने के लिए ही कुछ करना है (1 तीमुथियुस 2:4; 4:16; 2 तीमुथियुस 2:2; तीतुस 1:5)। वह इवेंजलिस्ट अर्थात सुसमाचार प्रचारक के दायित्वों को पूरा करने के लिए इतना समर्पित और गंभीर होना चाहिए कि यह उसकी आदत बन जाए ।

परमेश्वर द्वारा दिए गए इस कार्य के सम्बन्ध में रोनल्ड वार्ड का अवलोकन है:

> ऊपर उठाए गए प्रभु ने कलीसिया के लिए सुसमाचार प्रचारक और उपदेशक दिए। वे साफ तौर पर, कलीसिया के भाड़े पर लिए गए कर्मचारी नहीं बल्कि मसीह की ओर से मिला उपहार हैं। उपदेशक मसीह की शिक्षा बताता है; *सुसमाचार प्रचारक* अर्थात इवेंजलिस्ट सुसमाचार का प्रचार करता है ताकि लोग विश्वास ला सकें। तीमुथियुस ने यही करना था (तु. इफि. 4:11)। ... सुसमाचार का प्रचार करना *काम* है। इससे उन लोगों को जो बड़े रूखे ढंग से कहते हैं कि

> सेवक तो केवल "बातें" करने वाला होता है, ध्यान देना चाहिए। जिस प्रकार यीशु का काम शब्दों को व्यवहार में लाना (उनमें एक संदेश था) था और उसकी बातें कामों का असर थीं उसी प्रकार *इवेंजलिस्ट* की बातों में सामर्थ होती है (तु. 1 थिस्स. 1:5) और उनसे बहुत असर होता है। उसकी बातें *काम* ही हैं।
>
> ... कथा – कहानियों के विष और विवादों से जो सुधार के उलट होते हैं, झुंड को बचाने की चिंता में, शिक्षा देने और सिखाने के काम में दूसरे लोगों को नियुक्त करने की जिम्मेदारी में, जिससे उस अमानत की रखवाली की जा सके और वह संदेश और अधिक फैलाया जा सके; तीमुथियुस के लिए आवश्यक था कि वह उन लोगों को वचन देने की आवश्यकता को न भूले, जिन्होंने इसे कभी सुना ही नहीं था, ताकि वे भी राज्य में प्रवेश करके उस उद्धार को जो मसीह में है मना सकें।[20]

"अपनी सेवा को पूरा कर[21]।" सेवा के लिए अंशकालिक, उदासीन, अध्ययन करने में लापरवाह व्यक्ति स्वीकार्य नहीं है। ऐसी सेवा से लोगों को इस बात का "पूरा प्रमाण" कभी नहीं मिल सकता कि वह सुसमाचार प्रचारक अपनी सेवकाई को पूरा कर रहा है!

आज्ञा से जुड़ा पौलुस द्वारा ठहराया गया नमूना (आयतें 6-8)

पौलुस ने यदि तीमुथियुस को एक गंभीर आज्ञा दी, तो उसने अपने ही जीवन में उस आज्ञा का पालन करते हुए उसके महिमामय प्रदर्शन को भी दिखाया है। तीमुथियुस पौलुस की योग्यता से यह कहने के लिए कि "सुसमाचार प्रचारक के रूप में जो कुछ करने के लिए मैं तुझ से कह रहा हूं, मैंने भी वैसे ही किया" से प्रभावित हो सकता था और है! पौलुस यह भी कह सकता था, "पिछले अनुभव से मुझे ये तीन सच्चाइयां पता चली हैं।"

"मैं जानता हूं कि शीघ्र मरने वाला हूं"

पौलुस पहले ही "उंडेला"[22] जा रहा था (4:6)। यीशु की तरह, पौलुस ने भी अन्याय को सहते हुए, अपने उदाहरण से, इसे किसी दूसरे के लिए अर्थात समर्पण के बलिदान के लिए प्रेम के एक सुन्दर कार्य में बदल दिया (देखिए रोमियों 14:7, 8; 2 कुरिन्थियों 5:14, 15)।

मृत्यु को एक मसीही व्यक्ति से बढ़कर अधिक निकट से कोई दूसरा नहीं देख सकता। प्रेरित पौलुस इसका एक शानदार उदाहरण है जिसने जेल की काल कोठरी से मृत्यु के निकट होने के बारे में लिखा "मेरे कूच का समय आ पहुंचा है।"

"कूच" (यू.: *analusis*) शब्द का पौलुस का चयन महत्वपूर्ण है (देखिए फिलिप्पियों 1:21–23)। बार्कले ने इस शब्द के आधार पर मृत्यु के प्रति पौलुस के दृष्टिकोण का वर्णन किया:

> (क) यह शब्द किसी जानवर को ठेले या हल से निकालने के लिए है। पौलुस की नज़र में मृत्यु परिश्रम से विश्राम की तरह है। वह अपना बोझ उतारकर प्रसन्न

> था। जैसे [एडमंड] सपैंसर लिखता है, परिश्रम के बाद आराम, तूफान के बाद किनारे पर लगना, जीवन के बाद मृत्यु अच्छी बातें हैं। जीवन के अनियमित ज्वर के बाद, उसने आराम से सोना था। (ख) यह बंधन या बेड़ियों के खुलने के लिए शज़्द है। उसने रोमी जेल में से निकलकर स्वर्ग के आंगनों की महिमामय स्वतन्त्रता में परिवर्तित होना था। (ग) यह शज़्द किसी तज़्बू की रस्सियां खोलने के लिए है। पौलुस के लिए यह समय फिर से तज़्बू उखाड़ने का था। एशिया माइनर और यूरोप के मार्गों पर वह कई बार गया था। अब वह अपनी अन्तिम और सबसे लज़्बी यात्रा की तैयारी कर रहा था अर्थात वह उस मार्ग पर चलने को तैयार था जो परमेश्वर के पास जाता है। (घ) इस शज़्द का इस्तेमाल जहाज़ का लंगर खोलने के लिए किया जाता था। बहुत बार पौलुस ने भूमध्य सागर पर यात्रा की थी और गहरे जल के लिए जहाज़ को छोड़ा गया था। अब उसने सबसे गहरे जल में जाना था और वह अनन्तकाल की बन्दरगाह में पहुंचने के लिए मृत्यु के जल को पार करने के लिए तैयार था।[23]

इस सुन्दर स्वीकृति और मृत्यु में विजय से, पौलुस उस दूसरी बात को बताने लगा जो उसे ''पता'' चली।

''मैं जानता हूं कि मेरी सेवकाई सफल रही''

पौलुस ने लिखा, ''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं[24] मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है'' (2 तीमुथियुस 4:7)। सच्चाई के लिए संघर्ष करते हुए पौलुस ने ''अच्छी कुश्ती'' लड़ी थी (2 कुरिन्थियों 10:3-6; इफिसियों 6:10-18)। उसे मालूम था कि परीक्षाओं के बावजूद अपनी सेवकाई को पूरा करते हुए उसने अपनी ''दौड़ पूरी कर ली है'' (कुलुस्सियों 1:24-29)। उसने विश्वास और भरोसे से ''विश्वास की रखवाली'' की थी (2 तीमुथियुस 4:16-18)।

कुछ लोगों ने ध्यान दिया है कि पौलुस का वाज़्यांश बहुत से लोगों के दिलों को छूता है। ''मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं'' सिपाहियों के रूप में रोमियों को आकर्षित करता होगा; ''मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है'' धावकों के रूप में यूनानियों को आकर्षित करता होगा; ''मैंने विश्वास की रखवाली की है'' परमेश्वर के लोगों के रूप में यहूदियों को आकर्षित करता होगा।

इसके अलावा यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि इनमें से हर एक वाज़्य में ''मैंने ... की है'' (यू.: *egonismai, teteleka, tetereka*) एक पूर्णकालिक क्रिया है, जो इस बात पर व्याकरणीय ढंग से ज़ोर देती है कि पौलुस ने सचमुच विश्वास की कुश्ती लड़कर उस दौड़ को पूरा किया था! वह भी, यीशु की तरह, अपने कूच के समय ''पूरा हुआ'' पुकार सकता था (प्रेरितों 19:10; 20:26, 27; कुलुस्सियों 1:23; 2 तीमुथियुस 4:17 के साथ यूहन्ना 19:30 और प्रेरितों 9:15, 16 की तुलना करें)।

आइए इन तीन महत्वपूर्ण वाज़्यों के सज़्बन्ध में कुछ टिप्पणियां करते हैं। पहली बात,

पौलुस ''अच्छी'' कुश्ती कर रहा था। यह केवल ''कोई'' आम कुश्ती नहीं थी बल्कि ''अच्छी'' कुश्ती है (देखिए इफिसियों 2:10; गलतियों 6:10; मत्ती 5:16; रोमियों 12:20, 21; 2 कुरिन्थियों 10:3-6)। मसीही जीवन अनाड़ियों की तरह बर्ताव करना या शोर शराबा ही नहीं बल्कि एक *कुश्ती* है।[24]

यदि कमज़ोर व्यक्ति इस दंगल में भाग लेता है, तो वह बलवान बन जाता है। आज्ञा मानने वाले और संवेदनशील लोगों को इस लड़ाई में निमन्त्रण दिया जाता है परन्तु केवल एक शर्त के साथ कि वे सामर्थ के लिए प्रभु पर भरोसा रखें और दृढ़ निश्चय के साथ उसके हथियार पहनने को तैयार हों (देखिए इफिसियों 6:10-18; फिलिप्पियों 4:10-13)। हर रोज अपना इन्कार करना और अपने आप को अनुशासन में रखना आवश्यक है (लूका 9:23; 1 कुरिन्थियों 15:58) जिससे भय और कायरता की जगह सामर्थ, प्रेम और अनुशासन मिलता है (2 तीमुथियुस 1:7)। प्रभु के लिए आगे बढ़ना अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर होता है (मत्ती 28:18-20), जिसमें प्रेम से विजय पाई जाती है (1 यूहन्ना 4:19-21; 2 कुरिन्थियों 5:13-15; रोमियों 8:28, 35-39)।

दूसरी, पौलुस ने दौड़ पूरी कर ली थी। आरम्भ करना तो आसान है, परन्तु विरोध का सामना करते हुए इसे पूरा करने के लिए मसीह जैसा स्वभाव होना आवश्यक है। मत्ती 13:18-23 पर गहनता से विचार करें, जहां चार में से तीन लोग *पूरा* न कर पाने के कारण खो गए थे।

पूरा न कर पाने से निश्चित तौर पर मसीह में आत्माओं पर प्रभाव पड़ा है (देखिए गलतियों 1:6, 7; 5:7; 2 पतरस 2:21, 22; प्रकाशितवाक्य 3:1-3)। यीशु को शुरुआत करने वालों की आवश्यकता है, परन्तु बाद में रुकने और छोड़ जाने वालों पर वह क्रोधित होता है (लूका 9:57-62)। उसकी दौड़ ''तेज'' (डैश) नहीं है बल्कि एक मैराथन (लम्बी दौड़) है; उसके पद चिह्न पवित्रता और धार्मिकता की ओर ले जाते हैं और वे उस दौड़ को पूरी करने में अगुआई करते हैं (1 पतरस 2:21-24; 1 यूहन्ना 3:7, 10; 1 पतरस 1:13-16; प्रकाशितवाक्य 22:11)।

तीसरी, पौलुस ने विश्वास को पकड़े रखा था और विश्वास से वह स्थिर रहा था (इब्रानियों 11:1-12:3; रोमियों 5:1, 2)। 2 तीमुथियुस लिखते समय उसने दृढ़ विश्वास दिखाया (विशेषकर ''ज़ंजीरों,'' ''सतावों,'' ''कष्टों,'' ''मुझ से फिर गए,'' ''उण्डेला,'' ''कूच'' जैसे शब्दों के दृष्टिकोण से)। पौलुस अपने विरुद्ध अस्पष्ट और अनुचित आरोपों के कारण अपनी मृत्यु का पूर्वानुमान लगा रहा था। उन परिस्थितियों में, उसके शब्दों में यह गूंज थी कि *ये आदमी विश्वास से चल रहा था न कि देखने से!*

पौलुस की प्रतिज्ञा को ध्यान में रखते हुए, 2 कुरिन्थियों 4:16-5:8 में उसके शब्दों पर विचार करें:

> इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।

> ज़्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा ज़्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, ज़्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं। ज़्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है। इस में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें। कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं। और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; ज़्योंकि हम उतारना नहीं, बरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए। और जिस ने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है। सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं। ज़्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं। इसलिए हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उज़म समझते हैं।

पौलुस के तीसरे ''ज्ञान'' से इसका चरम मिलता है।

''मैं जानता हूं कि मुझे पुरस्कार मिलेगा''

मसीही व्यज़्ति को पुरस्कार कब मिलता है ? *अभी!* पौलुस ने कहा, ''भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ[25] *है* '' (2 तीमुथियुस 4:8)। सब कुछ जानने वाले परमेश्वर की ओर से जो जानता है कि पौलुस कैसे उसके अनुग्रह से अपने जीवन के अन्त के लिए तैयार होगा यह संदेश एक प्रेरित के द्वारा दिया गया (देखिए गलातियों 1:11, 12; प्रकाशितवाज़्य 2:10)।

उपहार मांगने वाला बच्चा नहीं जानता कि उसे ज़्या उपहार मिलेगा ज़्योंकि अभी तक उसके पिता ने कुछ लिया नहीं है। पौलुस को मालूम था कि उसके स्वर्गीय पिता ने उसके लिए पहले से ही पुरस्कार ले रखा है।

प्रतिज्ञा ज़्या थी ? प्रभु ''देगा।''[26] परमेश्वर हम में से किसी को धर्म का मुकुट देने को बाध्य नहीं है, परन्तु अपने अनुग्रह से उसने विश्वासी लोगों को यह मुकुट देने की प्रतिज्ञा की है (प्रकाशितवाज़्य 2:10)। प्रभु अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है (2 पतरस 3:9; 1 कुरिन्थियों 15:58)। पौलुस जानता था कि प्रभु ''मुकुट'' देता है तो उसे अवश्य मिलेगा!

प्रतिज्ञा किसने की ? ''धर्मी[27] न्यायी'' ने (4:8, 9)। मसीह के पास धर्म के सब गुण रख देने पर हम देखते हैं कि वह इन गुणों से परिपूर्ण है! हैरानी की बात नहीं कि पौलुस आश्वस्त था कि प्रभु अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा!

संक्षेप में, *पौलुस ने* उन सब लोगों को *इस पुरस्कार की* गारन्टी दी जिन्होंने प्रभु के प्रकट होने को ''प्रिय जाना।'' मसीह को कभी भी देख लें वह अनादि ही है (1 यूहन्ना

1:1-3)। जब तक हमारा प्रेम उसके "प्रगट होने" के प्रतिबिम्ब में से नहीं गुज़रता, तब तक यह अपूर्ण है और मान्य नहीं होगा। उसे अनादि, अर्थात परमेश्वर के स्वरूप वाले के रूप में देखना आवश्यक है जिसके अधीन अब सब चीज़ें हैं, जो कलीसिया के सिर के रूप में हर अधिकार और शासन के ऊपर है (इफिसियों 1:18-23; 1 पतरस 3:22; मत्ती 28:18-20) और सब का न्याय करने के लिए वापस आएगा (4:1)।

मसीह में तीमुथियुस के विश्वास के कारण पौलुस ने तीमुथियुस को अपनी सेवकाई पूरी करने के लिए कहा जो *प्रतिफल के लिए पौलुस का विश्वास है।* वही प्रतिफल उन सब लोगों के लिए भी है जो उस विश्वास को मानते हैं जिसका पीछा पौलुस ने किया था! पौलुस के भरोसे से, आइए हम आगे बढ़ने का साहस करते हैं!

पाठ 11: लोग और व्यक्तिगत बिनतियां (4:9-22)

लालसा किया गया साथ (आयतें 9-13)

मृत्यु का सामना होने पर भी आश्वस्त होने के बावजूद पौलुस के अपने आस - पास के लोगों से सम्बन्ध टूटे नहीं। उसके लिए संसार को अलविदा कहने से पहले एक बार फिर तीमुथियुस को देख लेना कितना रोमांचकारी होगा! मिलने की यह लालसा आवेगपूर्ण बिनती में बदल गई थी।

पौलुस की बिनती थी कि "मेरे पास शीघ्र[28] आने का प्रयत्न कर[29]।" बहुत बार पौलुस ने अपने सहकर्मियों को प्रभु के काम के लिए किसी जगह जाने या कहीं ठहरने के लिए कहा था (4:12; देखिए 1 तीमुथियुस 1:3; तीतुस 1:5)। परन्तु इस बार तीमुथियुस को रोम में प्रभु के लिए आने का काम करने से कुछ अधिक करना था। पौलुस तीमुथियुस को "मेरे पास" बुलाना चाहता था। पौलुस के मन में प्रभु का काम ही होगा, परन्तु तीमुथियुस को शीघ्र देखना उसकी लालसा और तीव्र इच्छा थी (1:3, 4)।

पौलुस की निजी समस्याएं (4:10), उन तीन लोगों के कारण थीं जो पौलुस को छोड़ गए थे। पहला, छोड़ जाने वाला चेला देमास, "इस संसार को प्रिय जानकर" थिस्सलुनीके को चला गया था। "प्रिय" के लिए यहां पर शब्द *अगापे* है जो आम तौर पर प्रेम का सर्वोत्तम रूप माना जाता है। समस्या केवल यही है कि देमास इस प्रेम को "इस संसार" के प्रति दिखा रहा था (देखिए 1 यूहन्ना 2:15-17)। यह इस बात का प्रमाण है कि प्रेम का उत्तम भाग गलत जगह या गलत व्यक्ति पर खर्च किया जा सकता है। यिर्मयाह 18:15-17 पर ध्यान दें जहां यहूदा को इसलिए दण्ड दिया गया क्योंकि उन्होंने बाहरी देवताओं को वे भेंटें चढ़ाई थीं जो उन्हें लाने के लिए यहोवा ने कहा था।

बीज बोने वाले के दृष्टांत में देमास कहां फिट होगा (मत्ती 13:18-23; लूका 8:5-15)? बार्कले ने देमास के चेले बनने की प्रवृत्ति की ओर झुकने की यह समीक्षा की:

> पौलुस के पत्रों में देमास का तीन बार वर्णन है; और इन तीनों हवालों में एक त्रासदी की कहानी है। (1) *फिलेमोन* 24 में देमास का नाम उन लोगों में है जिन्हें पौलुस अपने *सहकर्मी* कहता है। (2) *कुलुस्सियों* 4:14 में देमास का वर्णन बिना किसी टिप्पणी के किया गया है। (3) यहां [2 तीमुथियुस 4:10 में] देमास वह आदमी है जिसने इस वर्तमान संसार से प्रेम के कारण पौलुस को छोड़ दिया है। पहला, देमास एक सहकर्मी देमास है; दूसरा देमास केवल देमास है; तीसरा देमास छोड़ जाने वाला देमास है जिसने संसार को प्रिय जाना। वहां आत्मिक पतन का इतिहास है। धीरे - धीरे यह सहकर्मी छोड़ कर जाने वाला बन गया; सज़्मान का पद लज्जा का नाम हो गया।[30]

दूसरा, कम प्रसिद्ध चेला, क्रेसकेंस गलतिया (या गाउल) को चला गया था।

तीसरा, समर्पित चेला तीतुस क्रेते में सेवा करने (तीतुस 1:5) और अखिया में निकुपुलिस (देखिए तीतुस 3:12) में सेवा करने के बाद दलमतिया में चला गया। इल्लुरिकुम में अदरिया सागर से दलमतिया या थल मार्ग से उज़र की ओर आगे या ऊपर को जाना स्वाभाविक ही होगा। हैंड्रिज़्सन ने तीतुस के विषय में ठीक ही अवलोकन किया है:

> पौलुस से दूर होने पर हमेशा वह एक मिशन पर होता था, वह अदरिया सागर के पूर्वी तट या इसके दक्षिणी विस्तार (ऐज़्सटेंशन) अर्थात आयोनियन सागर से बहुत दूर कभी नहीं होता था। सक्षम, साहसी और समर्पित होने के कारण, वह जानता था कि झगड़ालू कुरिन्थियों, मिथ्यवादी क्रेते वासियों और लड़ाके दलमतिया वासियों से कैसे निपटना है।[31]

पौलुस के कर्मचारी और योजनाओं में तीन लोग हैं: लूका, मरकुस और तुखिकुस (4:11, 12)। रह गया चेला लूका ही था (4:11)। विलियम हैंड्रिज़्सन ने पौलुस के साथ तीमुथियुस के सज़्बन्ध और उनके दयालु स्वभावों की समीक्षा इस प्रकार की:

> सुसमाचार की तीसरी पुस्तक का लेखक एक असाधारण आदमी था। वह ''प्रिय वैद्य'' था (कुलुस्सियों 4:14), जो हमेशा पौलुस का, सुसमाचार का और प्रभु का वफादार था। कई बार यात्रा में वह पौलुस का साथी था, जैसा कि प्रेरितों के काम के भागों में ''हम'' से संकेत मिलता है (16:10-17; 20:6-16; 21; 27; 28)। दूसरी मिशनरी यात्रा पर वह त्रोआस में और फिलिप्पी में पौलुस के साथ था। स्पष्टतया उसे फिलिप्पी में छोड़ दिया गया था (प्रेरितों 16:17-19)। तीसरी यात्रा के अन्त तक वह फिर पौलुस से फिलिप्पी में मिला लगता है (प्रेरितों 20:6) और यरूशलेम में उसके साथ चला गया। कुछ समय तक वह हमें दिखाई नहीं देता। परन्तु अचानक फिर आ जाता है, ज़्योंकि फलस्तीन से वह रोम की लज़्बी और खतरनाक समुद्री यात्रा पर पौलुस के साथ था (प्रेरितों 27)। रोम की पहली और दूसरी जेल के दौरान वह इस प्रेरित के साथ था (कुलुस्सियों 4:14; फिलेमोन

> 24; 2 तीमुथियुस 4:11)। पौलुस को एक वैद्य और मित्र की आवश्यकता थी । लूका वैद्य भी था और मित्र भी ...।
>
> लूका और पौलुस में बहुत बातें मिलती-जुलती थीं। दोनों ही पढ़े लिखे और सज्य थे। दोनों विशाल हृदय के, खुले मन के, सहानुभूति रखने वाले लोग थे। सबसे बढ़कर, दोनों विश्वासी भी थे और मिशनरी भी।[32]

मरकुस वह चेला था जिसकी इच्छा की गई। पौलुस ने कहा, ''... सेवा के लिए वह मेरे बहुत काम का है'' (4:11)। नये नियम में यहां पर ''निजी विकास'' की एक कहानी मिलती है। हमें तीन अलग - अलग दृश्य मिलते हैं:

दृश्य 1: हम मरकुस को झगड़े के कारण के रूप में देखते हैं, *ज़्योंकि* वह ''काम के लिए उनके साथ नहीं गया था'' (देखिए प्रेरितों 15:36-41)। इस दृश्य में दो महान कर्मियों, पौलुस और बरनबास के बीच झगड़े का कारण मरकुस था। पौलुस काम और व्यवहार में आक्रामक था। बरनबास एक ऐसा व्यज़्ति था जो झगड़ा करने वाले के साथ एक और मील जाने को तैयार हो (देखिए मज़्ती 5:41; प्रेरितों 4:36, 37; 9:23-30)। मरकुस चाहे जिस भी कारण से काम के लिए उनके साथ न गया हो, परन्तु इससे पौलुस के आक्रामक मन को चैन नहीं आया।

दृश्य 2: मरकुस को ऐसे भाई के रूप में देखा जाता है जो किसी भी ''गुट बनाने वाले'' भाइयों के लिए जो अपनी संगति से मरकुस को निकालने की कोशिश कर सकते हैं ''माहौल बनाने'' के लिए एक त्यागा हुआ वाज़्य बनाने का कारण बनता है (हो सकता है कि उसने सुना हो कि पौलुस उसके साथ काम नहीं करना चाहता)। पौलुस ने अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए लिखा: ''(जिसके विषय में तुमने आज्ञा पाई थी कि यदि वह [मरकुस] तुज़्हारे पास आए, तो उससे *अच्छी तरह व्यवहार करना*)'' (कुलुस्सियों 4:10)। दृश्य 1 में पौलुस ने मरकुस के बारे में जो कुछ भी सोचा हो, दृश्य 2 में यह स्पष्ट हो गया कि पौलुस ने मरकुस से संगति नहीं तोड़ी थी।

किसी भाई या बहन के बारे में बिना सबूत अफवाह सुनने पर इस घटना को याद रखें। कुछ लोगों को भाइयों से या सेवा से बिना किसी कारण, या अफवाहों के आधार पर निर्णय करके यह तय करने के लिए कि भाई मरकुस को बुरा न कहें या उससे दुर्व्यवहार न करें, पौलुस ने अपनी टिप्पणियों को ज़ोरदार ढंग से कहा।

दृश्य 3: बुज़ुर्ग पौलुस को हम मरकुस के साथ काम करने को लालायित देखते हैं, जिसने पहले पौलुस और उसके बहुत बड़े सहकर्मी बरनबास के बीच झगड़ा करवाया था। लोग बदल जाते हैं। यहां पौलुस बदला या मरकुस, जो भी बदला हो (या दोनों बदले), इससे एक बहुत बड़ा सबक मिलता है। कई बार हमें कुछ समझौते करने आवश्यक होते हैं, और हमें दूसरों को भी समझाना चाहिए कि उनके लिए भी अपने आप को विनम्र करने की सज़्भावना रहती है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पौलुस मरकुस के साथ काम *करना चाहता था* ज़्योंकि वह मरकुस को ''बहुत काम का''[33] मानता था (4:11)। अलग-अलग योग्यताओं वाले भाई जब मिलकर किसी काम को सच्चाई से आगे बढ़ाते हुए चलते हैं तो कितनी अच्छी बात होती है।

तुखिकुस तैयार और विश्वासयोग्य चेला था जिसे पौलुस ने इफिसुस में भेज दिया था (4:12)। पौलुस शायद तुखिकुस को इफिसुस के क्षेत्र में तीमुथियुस की जगह भेज रहा था, ताकि तीमुथियुस पौलुस के पास जल्दी आ सके। इन तीनों ने मिलकर काफी काम किया (देखिए प्रेरितों 20:1–6)।

उसके बारे में बाइबल की हर व्याज़्या के अनुसार तुखिकुस एक अच्छा विकल्प होना था। (1) वह इतना विश्वासयोग्य था कि उसने पौलुस के लिए संदेश पहुंचाए थे (इफिसियों 6:21, 22; कुलुस्सियों 4:7, 16)। (2) वह एक प्रिय और विश्वासी सेवक था। (3) वह रिपोर्ट देने के लिए विश्वासयोग्य था, जिसमें वह "सब बातें" बता सकता था (इफिसियों 6:21)। (4) वह ऐसा व्यक्ति था जो मनों को "शांति"[34] दे सकता था (इफिसियों 6:22)। *इन सभी विवरणों को इकट्ठा करें, और फिर विचार करें कि इस योग्य भाई के गुण कितनी मण्डलियों में होने आवश्यक हैं।* यदि उसने 2 तीमुथियुस में पौलुस की बिनती की ओर ध्यान दिया, तो तीमुथियुस को इफिसुस में भाइयों की आवश्यकताओं के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं थी। तुखिकुस *विश्वासयोग्य था और काम पर जाने के लिए तैयार था!* आखिर तुखिकुस इफिसुस में पहले भी तो रहा था (इफिसियों 6:21, 22)।

पौलुस की बिनती उसकी निजी वस्तुओं के बारे में है (4:13)। "लेते आना" शज़्द में पौलुस की तड़प दिखाई देती है। यह चोगे और पुस्तकों[35] विशेषकर चर्मपत्रों को लाने के लिए उसकी बिनती है।[36] बार्कले ने पौलुस की इस बिनती को इस प्रकार लिपिबद्ध किया है:

> उसे *पुस्तकें* चाहिए; ... और इन पत्रियों में सुसमाचार के प्रारज़्भिक रूप हो सकते हैं। उसे *चर्मपत्र* चाहिए थे। चर्मपत्र दो तरह के हो सकते हैं। हो सकता है कि उसमें पौलुस के ज़रूरी सरकारी दस्तावेज हों जिसमें विशेष तौर पर उसकी रोमी नागरिकता का प्रमाणपत्र हो। अधिक सज़्भावना यह है कि वे पुराने नियम के इब्रानी शास्त्र की प्रतियां थीं, ज़्योंकि इब्रानी लोग अपनी पवित्र पुस्तकें पशुओं की खाल से बनाए चर्मपत्रों पर लिखते थे। सबसे बढ़कर, मृत्यु की प्रतीक्षा में जेल में पड़े पौलुस को यीशु के वचन और परमेश्वर के वचन की आवश्यकता थी।[37]

बेशक यह पौलुस की केवल बिनती ही हो, परन्तु ज़्या किसी को तीमुथियुस के उसके पास आने पर पौलुस की बिनती पर ध्यान देने पर संदेह हो सकता है?

जीवन के संकटों के बीच आत्मविश्वास कायम (आयतें 14-18)

यह भाग बेहद व्यज़्तिगत है ("मुझ," "तू," "हमारी," "मेरे," "मैं," का इन पांच आयतों में बारह बार इस्तेमाल हुआ), इसमें कठिन समयों में पौलुस के व्यज़्तिगत अनुभव के आधार पर ईश्वरीय बातों में स्थिर रहने की बिनतियां सुनाई देती हैं। यह तो ऐसा है जैसे पौलुस कह रहा हो, "तीमुथियुस, उस अनुभव के कारण जो मैंने परमेश्वर के सामने और अपने संकटों के दौरान लोगों में रहकर पाया है मैं तुझे बताता हूं कि इन परीक्षाओं का सामना कैसे करना है।" पौलुस ने तीमुथियुस को कठिन समयों के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से तीन मार्गदर्शन दिए!

(1) ''जब मनुष्य तुज़्हें नुज़्सान पहुंचाएं, तो उन्हें प्रभु पर छोड़ दो'' (देखिए 4:14, 15)। यह निर्णय सिकन्दर ठठेरे (धातु का काम करने वाले) के साथ पौलुस के अनुभव के आधार पर था।[38] इस व्यज़्ति ने पौलुस से ''बहुत बुराइयां[39] की[40]'' थीं। सिकन्दर ने बहस (''हमारी बातों का विरोध किया'') और व्यवहार (''बहुत बुराइयां की हैं'') दोनों का इस्तेमाल किया था। यह ध्यान में रखकर कि पौलुस ने ''बुराइयां'' के साथ ''बहुत'' शज़्द जोड़ा, हम समझ सकते हैं कि उसने विशेष तौर पर सिकन्दर का ही नाम ज़्यों लिया है।

पौलुस के साथ चाहे कितना भी बुरा ज़्यों न हुआ हो, उसने ऐसे अनुचित व्यवहार में भी ''परीक्षा की घड़ी में'' *उज़्र देने* का ढंग बताया (देखिए प्रेरितों 23:1–5; 16:35–40)।

> पौलुस सिकन्दर से अपना बदला लेने के बजाय, ''बदला लेने का काम पूरी तरह से प्रभु पर छोड़ देता है'' (तु. व्यवस्थाविवरण 32:35; तु. रोमियों 12:17–19; 1 पतरस 2:23)। इसलिए, उसने साथ ही यह भी जोड़ दिया, *प्रभु उसे उसके कामों के अनुसार बदला देगा।* यह बुराई होते रहने के लिए सहनशीलता से समर्पण नहीं है। यह तो सांसारिक न्याय करने वाले से बड़े और अधिक विश्वसनीय व्यज़्ति के हाथ अपना मुकदमा सौंपना है! जब मसीह न्याय करने के लिए वापस आएगा, तो वह यह नहीं भूलेगा कि सिकन्दर ने ज़्या किया है, बल्कि *उसके कामों के अनुसार बदला देगा* (वही क्रिया जो आयत 8 में थी, जहां इसका इस्तेमाल अच्छे अर्थ में किया गया है)। नोट भ.सं 62:12; नीति. 24:12; मज़्ती 25:31–46; यूहन्ना 5:28से; रोमि. 2:6; 2 कुरिं. 11:15; प्रकाशित. 2:23; 20:13.[41]

(2) ''जब सब आप को छोड़ दें, तो यीशु जैसे बन जाएं'' (देखिए 4:16; लूका 23:34; प्रेरितों 7:59, 60)। पौलुस ने पहले वाली एक सफाई को याद किया जब किसी ने उसका साथ नहीं दिया था (देखिए 2 तीमुथियुस 1:15)। हैरानी की बात नहीं कि उनेसिफुरुस (1:16) और लूका (4:11) का पौलुस की नज़र में बहुत महत्व था। पौलुस का मानना था कि तीमुथियुस वैसा ही मित्र और सहकर्मी है और वह उसके अपने पास शीघ्र आने की लालसा कर रहा था।

तीमुथियुस वहां समय पर पहुंचा या नहीं यह तो पता नहीं, परन्तु पौलुस को अवश्य ही उससे शांति मिली होगी। ऐसे उपचार के अधीन (''... भला हो, कि उसका उनको लेखा न देना पड़े''; 4:16) देखना अच्छा लगता है; वह मनुष्यों के विरुद्ध खड़ा हो सकता था ज़्योंकि उसने विश्वास से पीछे की ओर जाकर उसके वर्तमान संकट में उसे आगे की ओर विश्वास में झुका दिया। इस सच्चाई को गलत न समझें। जब आप किसी शत्रु को क्षमा भी कर सकते हैं जो आपको हानि पहुंचाने वाला हो, जैसे यीशु और स्तिफनुस ने किया, तो आपने एक ईश्वरीय आत्मा के साथ जो परमेश्वर और मनुष्यों के सामने विजय का आश्वासन देता है शैतान की सबसे बड़ी शज़्ति पर विजय पा ली (देखिए मरकुस 15:39)।

(3) ''जब लोग तुझे छोड़ दें, तो प्रभु पर भरोसा रख, जो तेरा साथ देगा जैसे उसने मेरा

साथ दिया'' (देखिए 4:17, 18)। पौलुस चाहता था कि तीमुथियुस ऐसे समयों में जिनका सामना पौलुस को करना पड़ रहा था प्रचार के उसके नमूने पर ध्यान दे:

''पूरा - पूरा प्रचार हो।'' पौलुस ने कहा, ''परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ[42] दी'' (4:17)। उसने माना कि उसकी सामर्थ प्रभु की उपस्थिति (मत्ती 28:20) और सामर्थ से (फिलिप्पियों 4:13; इफिसियों 3:20, 21) आई थी। जब मसीही लोगों को प्रभु की ओर से सामर्थ मिलती है तो आश्चर्यजनक परिणाम मिलते हैं।

पद 17 में आगे वह कहता है, ''... ताकि मेरे द्वारा पूरा पूरा प्रचार हो ...।'' पौलुस इस बात की पुष्टि कर रहा था कि उसने वही किया जो उसने पहले तीमुथियुस से करने को कहा था (4:5)। *उसने अपनी सेवकाई पूरी की थी।* आयत 5 में इस्तेमाल किया गया ''पूरा कर'' के लिए मूल यूनानी शब्द (plerophoreso) और आयत 17 (plerophorethe) एक ही है।

''प्रचार कर ताकि *सारे लोग* या वे सुनें जिनके पास उन्हें भेजा गया था'' (देखिए प्रेरितों 9:15, 16; 22:14, 15; 26:16-18, 22, 23; 19:10; रोमियों 15:18-21; कुलुस्सियों 1:23; मरकुस 16:15, 16)। उसने कहा, ''... और सब अन्यजाति सुन लें।''

''प्रचार करो ताकि तुम छुड़ाए जा सको।'' पौलुस ने दृढ़तापूर्वक कहा, ''मुझे छुड़ाया गया।''

हमारा छुड़ाया जाना

प्रभु हमें छुड़ाएगा
''सिंह के मुंह से''[43] (पद 17)
''हर एक बुरे काम से'' (पद 18)
→ ''अपने स्वर्गीय राज्य में'' (पद 18)

अन्त में उसने कहा, ''... उसी की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।''

यहूदा 23 में यहूदा हमसे आग में झपटकर लोगों को निकालने का आग्रह उससे अधिक करने के लिए नहीं कह रहा था जितना प्रभु ने प्रेरित पौलुस के लिए किया था! प्रभु अपने लोगों का ध्यान रखता है और पौलुस हमें अपने ही संकट के क्षण से यह बताना चाहता था!

अन्तिम टिप्पणियां (आयतें 19-22)

हम पत्री के उस भाग पर आते हैं जिसमें शिक्षा सम्बन्धी कोई मांग या घोषणा नहीं है जिसे हम आम तौर पर यह सोचते हुए कि इन आयतों में कोई सबक नहीं है अध्ययन के लिए इन्हें पास कर देते हैं। निश्चित रूप से परमेश्वर ने इन आयतों का महत्व देखा, वरना वह अपनी वाचा में इन्हें शामिल न करता। अन्तिम टिप्पणियों का सम्बन्ध प्रमुख व्यक्तियों और पौलुस की व्यक्तिगत इच्छाओं से है।

आइए उन व्यक्तियों पर विचार करते हैं जिनका उल्लेख पौलुस ने 19 और 20 पदों में किया:

प्रिस्किल्ला और अकविल्ला जो पौलुस को पिछले परिश्रमों से प्रिय थे (प्रेरितों 18:2, 18, 26; रोमियों 16:3; 1 कुरिन्थियों 16:19)। पौलुस उनके साथ रहकर, काम करता था, और उनसे प्रेम करता था। आखिर, उन्होंने उसके लिए अपने प्राण तक जोखिम में डाल दिए थे (रोमियों 16:3, 4)।

उनेसिफुरुस एक और आदमी था जो पौलुस के लिए महत्वपूर्ण था। उसने रोम में पौलुस की कैद के दौरान उसकी खोज करके[44] वहां और इफिसुस में भी उसकी बहुमूल्य सेवा करके उसे ''ताजा'' किया था।

इरास्तुस तीमुथियुस के साथ गया था (प्रेरितों 19:22)। पौलुस को मालूम था कि तीमुथियुस पूछेगा कि इरास्तुस कहां काम करता है। पौलुस की चिंता से हम जानते हैं कि इरास्तुस कुरिन्थुस में था (4:20)। इस छोटे से संकेत से हमें पता चलता है कि सज़्प्रेषण के माध्यम से, हम एक दूसरे को उत्साहित कर सकते हैं।

त्रुफिमुस भी पौलुस और तीमुथियुस के साथ गया था (प्रेरितों 20:4, 5) और उसने अनजाने में पौलुस को इफिसुस में कुछ कष्ट पहुंचाया था (प्रेरितों 21:29)। बीमारी के कारण, वह मिलेतुस में (पौलुस से सफ़र में) अलग हो गया था। इससे समझ आ जाएगी कि त्रुफिमुस रोम से अभिवादन ज़्यों नहीं भेज रहा था।

मिशन पर गए प्रभु के लोगों को बीमारी का सामना करना पड़ सकता है (देखिए 2 राजा 13:14; 20:1; गलतियों 4:13; फिलिप्पियों 2:25–27; 1 तीमुथियुस 5:23), परन्तु परमेश्वर के लोगों को इस भय से प्रभु के मिशन या आज्ञा को त्यागना नहीं चाहिए। वह हमारे साथ होगा और हमें ''हर एक बुरे काम से'' छुड़ाएगा (4:18)। कुछ वर्ष पूर्व अबिलेन क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी से एक नौजवान बहन रूस में प्रभु के लिए एक मिशन ट्रिप के समय लगभग मर ही चुकी थी। ठीक होने के लिए न केवल उसे दवाइयां और उपचार उपलज़्ध करवाया गया बल्कि अगले वर्ष वह फिर से प्रभु के लिए परिश्रम करने के लिए वहीं सेवा के लिए लौट आई। ज़्योंकि वह हमेशा हमारे साथ है (मज़्ी 28:20), इसलिए हम उसके लिए कहीं भी जा सकते हैं और हमें जाने को तैयार होना चाहिए!

यूबूलुस को निश्चित तौर पर तीमुथियुस जानता था, परन्तु हमें उसके बारे में केवल इसी पद से पता चलता है।

दंत कथा के अनुसार, पूदेंस रोमी सीनेट का एक सदस्य था जो पतरस के द्वारा मसीही बना था।[45]

बाइबल के बाहर की परज़्परा के अनुसार, लीनुस बाद में रोम में एक बिशप बन गया,[46] बहुत से लोग इसके तथ्य होने पर संदेह करते हैं। निश्चित तौर पर ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि वह कभी ''पोप'' बना हो, यद्यपि कैथोलिक सूची में उसका नाम मिलता है।

ज़्लौदिया के बारे में कहा जाता है कि वह लीनुस की माता थी।[47]

इस समय पौलुस की अपनी इच्छाएं तीन प्रकार की थीं:

1. ''जाड़े से पहिले चले आने का प्रयत्न कर'' (2 तीमुथियुस 4:21)। अनुभव से पौलुस को मालूम था (देखिए प्रेरितों 27) कि अज़्तूबर से अप्रैल तक भूमध्य सागर में यात्रा

करना बहुत खतरनाक होगा। बहुत से लोग इस समय सफ़र करने की कोशिश नहीं करते थे। इस दौरान समुद्र का सफ़र बन्द कर दिया जाता था। पौलुस जानता था कि देर होने का अर्थ यह होगा कि वह पृथ्वी पर तीमुथियुस का मुंह दोबारा कभी नहीं देख पाएगा (देखिए 1:3, 4)। इसके अलावा, पौलुस जानता था कि जाड़े के मौसम में बागा जेल में उसके बहुत काम आएगा (4:13)।

किसी प्रिय का अभिवादन करने के लिए, गलती को सुधारने, उपहार भेजने, किसी को क्षमा करने, किसी खोए हुए को ढूंढ़ने, किसी के लिए अपने प्रेम को व्यज्त करने, या कोई ऐसा काम करने के लिए जो करना आवश्यक हो अधिक प्रतीक्षा न करने की शिक्षा देते हुए ''जाड़े से पहले आ जा'' शीर्षक से बहुत से प्रवचन दिए जा चुके हैं! हो सकता है कि कल बहुत देर हो चुकी हो।

ज़्या हम सभी कोमल हृदय से यह आशा नहीं करते कि तीमुथियुस ने देर नहीं लगाई? हमें यह सोचना अच्छा लगेगा कि वह पौलुस के पास पहुंच गया और जाड़े से पहले उसने उसकी बिनतियों को पूरा कर दिया!

2. ''प्रभु तेरी आत्मा के साथ रहे ...'' (2 तीमुथियुस 4:22; देखिए 1:7)। पौलुस तीमुथियुस से कह रहा था, ''यदि तू कभी *अपने आप को* प्रभु की सोच जैसा बनाए, तो इस 'विदाई सज़्बोधन' में शामिल बिनतियों और उद्देश्यों से ही करना!''

3. ''तुम पर अनुग्रह होता रहे।'' वह जानता था कि *अनुग्रह* उसके और तीमुथियुस के लिए काफी होगा, जिससे वे निर्बल होने पर भी बलवान हो सकते थे (इफिसियों 6:10-13)।

संक्षेप में

इस प्रकार भावनाओं से भरी, निजी बिनतियों से धड़कती हुई, और विश्वास और ईमानदारी के लिए आदेशों से सराबोर यह शानदार पत्री समाप्त होती है। अल्बर्ट बारनस लिखता है:

> इसे सबसे प्रमुख प्रेरितों में से एक उस व्यज़्ति के लिए अंतिम परामर्श माना जा सकता है जिसने सेवकाई में अभी अभी प्रवेश किया है। हमें चाहिए कि इसे दिलचस्पी से पढ़ें जैसे हम महान और अच्छे लोगों के अंतिम शज़्द पढ़ते हैं। ... हमें लगता है कि हमारे पास उसकी इच्छाओं को व्यज़्त करने का समय इतना नहीं है। वह ऐसे विषय चुनेगा जो उसके मन के निकट हों, और जिन्हें वह सबसे महत्वपूर्ण मानता है। इससे ऐसे व्यज़्ति के चरणों में बैठकर उसकी सलाह लेने से अधिक दिलचस्प स्थिति हमारे लिए नहीं हो सकती। इसलिए सुसमाचार के एक जवान सेवक के लिए यह पत्री बहुत ही मूल्यवान है; हर मसीही के लिए, अन्यजातियों के महान प्रेरित के अन्तिम शज़्दों की ओर ध्यान देने के अलावा कोई रास्ता नहीं है, कि उस धर्म के पक्ष में उसकी अन्तिम लिखित गवाही की ओर ध्यान दे जिसके [प्रचार] के लिए उसने अपने जीवन और योग्यताओं को समर्पित कर दिया।[48]

इस प्रकार, यहां दिया गया महत्व केवल लिखी गई बातें ही नहीं बल्कि इसके लिखने वाले का भी था। हैरानी की बात नहीं कि उसने हमसे कहा कि हम उसकी सी चाल चलें जैसे उसने मसीह का अनुसरण किया है (1 कुरिन्थियों 11:1)। जैसे यीशु ने बंजर गुलगुता को महिमा से चमका दिया, वैसे ही *पौलुस ने रोम की अंधेरी जेल को आत्मविश्वास, साहस और विजय के जश्न के कमरे के रूप में बदल दिया!*

पवित्र हृदय और मसीही लोगों के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से मिले संदेश के साथ, पौलुस ने परीक्षाओं और भज्तिपूर्ण जीवन आज़माइशों के बीच साहस से दृढ़ होकर रहने के लिए तीमुथियुस को ये अन्तिम शज़्द लिखे। उसका महान जीवन उसकी कलम से भारी था, जिसमें हर पंज़्ति में उसके अपने नमूने की गूंज थी!

मसीह की बदल डालने वाली सामर्थ

पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि अन्त के दिनों में लोग भज़्ति का भेष तो धारेंगे परन्तु उसकी शज़्ति का इन्कार करेंगे। विलियम बार्कले ने लिखा,

> इन लोगों का अंतिम दण्ड यह है कि वे धर्म का बाहरी रूप बरकरार रखते हैं, परन्तु इसकी सामर्थ से इन्कार करते हैं। कहने का भाव यह कि वे परज़्परागत धर्मसारों को रटकर, सही आराधना का दिखावा करते हैं; वे धर्म के सभी बाहरी रूपों को बनाए रखते हैं; परन्तु धर्म की सामर्थी शज़्ति के रूप में कुछ भी नहीं जानते जो लोगों के जीवनों को बदलती है। यह कहना ठीक होगा कि धर्म का सबसे बड़ा अपाहिजपन सबसे बड़ा पापी नहीं बल्कि मीठी ज़ुबान वाला सफ़ेदपोश श्रद्धालु है जो इस सुझाव से कांप उठता है कि सच्चा धर्म तो वह सामर्थ है जो व्यज़्ति के निजी जीवन को बदलती है। जब तक कोई यीशु मसीह के बदलने वाली सामर्थ के द्वारा अपने आप को बदलने के लिए तैयार नहीं होता उसे मसीहियत के पास नहीं आना चाहिए।[49]

ज़्या हम भज़्ति का रूप तो धारण करते हैं परन्तु उसकी शज़्ति का इन्कार करते हैं? ज़्या हम मसीह को हमें बदलने की अनुमति देते हैं?

पाद टिप्पणियां

[1] प्रगट होना (यू.: *epiphaneia*) – एक शज़्द ''जिसका इस्तेमाल मुज़्यतया रोमी सम्राट के सज़्बन्ध में होता है। साम्राज्य के उसके सिंहासन पर बैठने को *एपीफेनिया* कहा जाता था; और विशेष तौर पर यहां पर पौलुस की सोच इसी पृष्ठभूमि से थी, इसका इस्तेमाल सम्राट द्वारा किसी राज्य या नगर में जाने के लिए किया जाता था'' (विलियम बार्कले, द *लेटर्ज़ टू तिमोथी, टाइटस एण्ड फिलेमोन,* द डेली स्डटी बाइबल सीरीज़, संशो. संस्क. [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1960], 233)। [2]वहीं। [3]ऐल्फ्रड मार्शल, *द आर. एस. वी. इंटरलीनियर ग्रीक – इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड् रैपिड्स मिशी.: ज़ौंडरवन, 1970), 842. [4]प्रचार (यू.:

keroxon) – ‘‘घोषणा करने वाला, या मुनादी करने वाला होना ... मज़ी 10:27 ... लूका 12:3; प्रेरितों 10:42 ... [विशेषतया] धार्मिक सच्चाई अर्थात सुसमाचार का प्रचार करते हुए इसके लाभ और दायित्व बताना ... 1 पत. 3:19 ... प्रेरितों 20:35; 28:31 ... 1 कुरिं. 9:27 ... कुलु. 1:23 ... 2 तीमु. 4:2’’ (एडवर्ड रोबिन्सन, *ए ग्रीक एण्ड इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* [न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1863], 398–99)।[5]तैयार (यू.: *epistethi*) – ‘‘डटे रहना, ... तात्कालिक, दबाव डालने वाला, गंभीर ... निकट होना ... 2 तीमु. 4:6’’ (रोबिन्सन, 310)।[6]उलाहना (यू.: *elegxon*) – ‘‘सामने लाना, उघाड़ना, तीतु. 2:15 ... प्रदर्शन, प्रमाणित करना ... किसी को कायल करना या दोषी ठहराना ... सुधारना ... 2 तीमु. 4:2 ...’’ (वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एण्ड अदर अरली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* 2रा संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ड्ंट एण्ड एफ़. विलबर गिंगरिक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1957], 248–49)।[7]डांट (यू.: *epitimeson*) – ‘‘दोष लगाना, तिरस्कार करना, गंभीरता से बोलना, किसी कार्य को करने से रोकने के लिए चेतावनी देना ... मज़ी 12:16; 16:20; 20:31 लूका 18:39 ... दण्ड देना’’ (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 303); ‘‘... दण्डित करना, ... दण्ड देने के अर्थ में पुरस्कृत करना ... दोष से कर लगाना, डांटना, फटकारना ... कठोरता से डांटना ... गलती निकालना ... कठोरता से फटकारना या आज्ञा देना ... मज़ी 16:22 ... मरकुस 8:30’’ (सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रीज़्म, *ए ग्रीक इंग्लिश लैज़्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर [एडिनबर्ग, स्कॉटलैण्ड: टी. एण्ड टी. ज़्लार्क, 1901; रीप्रिंट संस्क., ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1977], 245)। [8]समझा (यू.: *parakaleson*) – ‘‘किसी का पक्ष लेने की पुकार ... किसी को ... आग्रह करने, ताड़ना करने, उत्साहित करने के लिए ... बुलाना ... 2 कुरिं. 5:20 ... 1 तीमु. 2:1 ... 2 तीमु 4:2; तीतु. 1:9; इब्रा. 10:25; 1 पत. 5:12 ...’’ (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 622–23)। [9]सहना (यू.: *anechomai or enecho*) – ‘‘उन परिक्षाओं को सहारना जो आप पर पड़ती हैं, मान लेना ... 2 थिस्स. 1:4 ... जब हम पर सताव आता है तो हम उसे सहते हैं, 1 कुरिं. 4:12 ... आप इसे बड़ी सहजता से मान लेते हैं, 2 कुरिं. 11:4 ... *सुनने या अपनी इच्छा से ध्यान देने* के अर्थ में, सहना ... इब्रा. 13:22 ... 2 तीमु. 4:3 ... कोई शिकायत मान लेना ... प्रेरितों 18:14’’ (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 65)। [10]बटोरना (यू.: *episoreuo*) – ‘‘इकट्ठे करना, ढेर लगाना, ... अपने लिए बहुत से गुरु ढूंढ़ना या उनके पीछे भागना, 2 तीमु. 4:3’’ (थेयर, 244)।

[11]रोनल्ड ए. वार्ड, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस,* (वैको, टैज़्स.: वर्ड बुज़्स, 1974), 207. [12]‘‘ज़्यूज़िकल चेयर’’ बच्चों का एक खेल होता है जिसमें कुर्सियों को गोलाकार में लगाकर संगीत की धुन पर उनके इर्द–गिर्द घूमा जाता है। धुन बंद हो जाने पर, सभी बच्चे कुर्सियों पर बैठने के लिए लपक पड़ते हैं। सब कुर्सियां भर जाने के बाद जो बच्चा नहीं बैठ पाता उसे खेल से निकाल दिया जाता है। ‘‘‘ज़्यूज़िकल चेयर’ अर्थात कुर्सियों का खेल’’ जगह बदलने का एक रूपक बन गया है। [13]खुजली (यू.: *knetho*) – यहां पर मध्य स्वर अच्छा को दिखाता है। ऐसा वे *अपने कानों* की खुजली के कारण करते हैं। *यह उनका स्वार्थ है!* *knetho* का अर्थ है ‘‘खुजलाना, सुहराना, ललकना ...कुछ भावना, सुनने की इच्छा करना ... 2 तीमु. 4:3’’ (थेयर, 351); ‘‘जिज्ञासा के लिए [प्रतीकात्मक], दिलचस्प और मसालेदार बात ढूंढ़ने वाला हो। यह खुजलाना नये शिक्षकों के संदेशों से जाता है’’ (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 438)। [14]फेरना (यू.: *apostrepho*) – ‘‘किसी से कोई चीज़ दूर करना, रोमि. 11:26 ... किसी को उसकी निष्ठा से मोड़ना, कर्ज़व्य से फिरने का प्रलोभन ... लूका 23:14 ... तीतु. 1:14; छोड़ने के अर्थ में ... 2 तीमु. 1:15’’ (थेयर, 68)। [15]कथा कहानियां (यू.: *esontai*) – ‘‘दंत कथा, ... चालाकी से बनाई गई कहानियां, 2 पत. 1:16 ... तीतु. 1:14 ... बूढ़ियों वाली सांसारिक कहानियां, 1 तीमु. 4:7’’ (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 530–31); ‘‘कल्पित कथा ... कोई कल्पना, झूठ ... 1 तीमु. 1:4; 4:7; 2 तीमु. 4:4; तीतु. 1:14’’ (थेयर, 419)। [16]कान लगाना (यू.: *muthos*) – कर्मवाच्य संकेत देता है कि इन लोगों ने किसी बाहरी स्रोत से अपने आप को ऐसा होने दिया। किसी लक्ष्यहीन पशु की तरह, उन्हें किसी ने आवाज दी और वे प्रभु के संदेश के बजाय उस मिथ्या से भरमाए जाकर उसकी ओर हो लिए! *Ektrepo* का अर्थ है ‘‘बाहर मुड़ना या घूमना, ... जोड़ से हटा हुआ ... जोड़ से निकालना, भटकना ... 1 तीमु. 1:6 ... 2 तीमु. 4:4 ... किसी दूसरे के पीछे जाने के लिए, से मुड़ना,

1 तीमु. 5:15'' (थेयर, 200)। [17]सावधान रह (यू.: *nephe*) – इस पद में कोई विकल्प नहीं होगा। एक विश्वासी सुसमाचार प्रचारक के लिए हर चरण *आवश्यक* है। *नेफो* शज़्द का अर्थ है ''गंभीर ... शांत और स्थिर मन के होना; संयमी, निष्पक्ष, सतर्क: 1 थिस्स. 5:6, 8; 2 तीमु. 4:5, 1 पत. 1:13; 5:8'' (थेयर, 425); ''हर आवेश, जल्दबाज़ी, उलझन [से] मुज़्त होना ..., पूरी तरह संतुलन में होना, अपने आप को काबू में रखने वाला... प्रार्थना करने में अपनी सहायता के लिए स्वयं पर काबू रखने का अज़्यास करें, 1 पत. 4:7'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 540)। [18]उठाना (यू.: *kakopatheson*) – ''विपज़्ति सहना ... कष्ट को धैर्य से सहना ... 2 तीमु. 4:5'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 398); ''बुराइयां (कष्ट, मुसीबतें) सहना; सताया जाना: 2 तीमु. 2:9; याकूब 5:13; 2 तीमु. 2:3'' (थेयर, 320)। [19]सुसमाचार प्रचारक या इवेंजलिस्ट (यू.: *euaggelistes*) – ''सुसमाचार प्रचार करने वाला, इफि. 4:11 ... प्रेरितों 21:8 ... 2 तीमु. 4:5'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 318)। [20]वार्ड 209.

[21]पूरा करना (यू.: *plerophoreson*) – ''हर पहलू से सेवकाई को पूरा करना, 2 तीमु. 4:5 ... पूरी तरह से कायल या आश्वस्त'' (थेयर, 517)। [22]उंडेला गया (यू.: *spendomai*) – कर्मवाच्य पता देता है कि पौलुस ऐसा होने के लिए उज़्सा नहीं रहा था। यह एक ऐसा कार्य था जो एक बाहरी स्रोत से उस पर पड़ रहा था, 2 तीमु. 4:6; फिलि. 2:17 (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 769)। [23]बार्कले, 240. [24]कुश्ती (यू.: *agon*) – ''खेलों में मुकाबला ... इब्रा. 12:1 ... संघर्ष, लड़ाई ... सुसमाचार के लिए कष्ट, फिलि. 1:30 और इसकी सेवा में संघर्ष ... बड़े तनाव में या बड़े विरोध का सामना करते हुए, 1 थिस्स. 2:2; 1 तीमु. 6:12; 2 तीमु. 4:7 ... सज़्भाल, चिंता ... कुलु. 2:1'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 14)। [25]रखा हुआ (यू.: *apokeitai*) – ''सज़्भालकर रखा, सज़्भाला हुआ ... यह किसी के लिए ठहराया हुआ है'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 92)। [26]प्रतिफल (यू.: *apodidomi*) – ''देना, बांटना ... किसी के लिए अपना फर्ज निभाना, 1 कुरिं. 7:3 ... लौटाना, पुरस्कार, बदले में देना ... मज़्ी 6:4, 6, 18 ... 2 तीमु. 4:14, रोमि. 12:17 ... 1 तीमु. 5:4'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 90); ''हक देना, बदला देना, अच्छे या बुरे अर्थ में बदला देना ... रोमि. 2:6; 2 तीमु. 4:8, 14 ; प्रकाशित. 18:6; 22:12 ...'' (थेयर, 60, 61)। [27]धर्मी (यू.: *dekaios*) – ''ईश्वरीय और मानवीय नियमों को पूरा करने की विशेषता; जो वैसा है जैसा उसे होना चाहिए ... सही ... पवित्र, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने वाला ... निर्दोष, दोष रहित, निरपराध ... मज़्ी 27:19, 24 ... यूह. 1:14 ... 1 पत. 3:18; 1 यू. 2:1 ... परमेश्वर को ... मसीह को मान्य, 2 तीमु. 4:8 ... 2 थिस्स. 1:5'' (थेयर, 148–49)। [28]शीघ्र (यू.: *spoudason*) – ''तुरन्त, बिना देरी के, जल्द 2 तीमु. 4:9 ... 1 तीमु. 3:14; इब्रा. 13:23. जितनी जल्दी हो सके। ... प्रेरितों 17:15'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 814)। ''प्रयत्न कर'' के साथ ''शीघ्र'' जोड़कर पौलुस मूलत: तीमुथियुस से ''जल्दी करने'' को कह रहा था! [29]प्रयत्न कर (यू.: *tacheos*) – ''जल्दी, उतावली कर ... प्रेरितों 20:16 ... जितनी जल्दी हो सके छोड़ आ ... प्रेरितों 22:18 ...'' (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 769)। शज़्दकोषों में **spoudazo** के नीचे यह हवाला दिया जाता है, जहां 2 तीमु. 4:9, 21; तीतु. 3:12; गला 2:10; इफि. 4:3; 1 थिस्स. 2:17; 2 तीमु. 2:15; आदि भी मिलता है (अर्ड्ंट एण्ड गिंगरिक, 771)। यहां पर आदेशसूचक एक बिनती हो सकता है, परन्तु शज़्दों में ''तीमुथियुस, तू जल्दी आ जा'' का भाव मिलता है। [30]बार्कले, 244.

[31]विलियम हैंड्रिज़्सन, *ए कमैन्ट्री ऑन 1 एण्ड 2 तिमोथी एण्ड टाइटस* (लंदन: द बैनर ऑफ़ ट्रुथ ट्रस्ट, 1964), 320. [32]वहीं। [33]बहुत काम का (यू.: *euchrestos*) – ''काम में लाना आसान, उपयोगी, लाभदायक, 2 तीमु. 2:21; 4:11; फिले. 11'' (रोबिन्सन, 309)। [34]शांति (यू.: *paraklesis*) – याचना, बिनती, प्रार्थना, 2 कुरिं. 8:4 ... ताड़ना, चेतावनी, प्रोत्साहन; प्रेरितों 15:31 ... 1 कुरिं. 14:3; 2 कुरिं. 8:17; फिलि. 2:1; 1 तीमु. 4:13; इब्रा. 12:5 ... 13:22 ... सांत्वना, दिलासा, राहत: 2 कुरिं. 1:4–7 ... समझाने वाली बातचीत, भावोज़ेजक भाषण, ... उपदेश देने वाली सामर्थपूर्ण बातचीत: रोमि. 12:8 ... प्रेरितों 18:15 ... शिक्षा देने, ताड़ना देने, सांत्वना देने का दान पाया हुआ व्यज़्ति, प्रेरितों 4:36 ... 1 थिस्स. 2:3'' (थेयर, 483)। [35]पुस्तक (यू.: *biblion*) – ''छोटी पुस्तक ... लूका 4:17, 20; यू. 20:30; गला. 3:10; 2 तीमु. 4:13 ... लिखित दस्तावेज ... मज़्ी 19:7 ... उन लोगों की सूची जिन्हें परमेश्वर ने अनन्त उद्धार के लिए ठहराया है:

प्रकाशित. 13:8 ... 17:8; 20:12; 21:27'' (थेयर, 101–2)। [36]चर्मपत्र (यू.: *membrana*) – ''झिल्ली, चमड़े, चर्मपत्र पर लिखी पांडुलिपि, 2 तीमु. 4:13'' (रोबिन्सन, 450)। [37]बार्कले, 252. [38]इस पर कि यह सिकन्दर कौन था, विलियम हैंड्रिज़्सन ने लिखा है: ''उसका नाम आज के ब्राउन, जोन्स, या स्मिथ नामों की तरह ही प्रचलित था (मरकुस 15:21; प्रेरितों 4:6; 19:33, 34; 1 तीमु. 1:19, 20; 2 तीमु. 4:14, सज़्भवत: पांच अलग-अलग सिकन्दर हैं)। संदर्भ से यह लगेगा कि *यह सिकन्दर* रोम में रह रहा है; ज़्योंकि इस का कारण यह है कि रोम में ही वह पौलुस का जो उस नगर में था, विरोध कर पाया था। अब यदि वह निष्कर्ष सही है, तो सज़्भवत: उसका न तो 1 तीमु. 1:20 में वर्णित सिकन्दर से परिचय था और न ही प्रेरितों 19:33, 34 वाले सिकन्दर से, ज़्योंकि ये सिकन्दर इफिसुस के इलाके में रहते थे'' (हैंड्रिज़्सन, 324)। [39]बुराई (यू.: *enedeixato*) – ''... बुरा ... बुरे स्वभाव का ... सोच, भावना, कार्य का ढंग ... नीच, गलत, दुष्ट मज़ी 21:41 ... फिलि. 3:2; प्रकाशित. 2:2 ... कुलु. 3:5 ... दुष्ट ... जो व्यवस्था के विपरीत हो ... रोमि. 1:30; 1 कुरिं. 10:6; 1 तीमु. 6:10 ...कष्टदायक, हानिकारक, विनाशक ... तीतु. 1:12 ...'' (थेयर, 320)। [40]की (यू.: *kakos*) – दिखाना, सिद्ध करना, बातों से या कामों से: ... रोमि. 9:22 ... इफि. 2:7 ... तीतु. 2:10; 3:2; इब्रा 6:11 ... 1 तीमु. 1:16 ... दिखाना, प्रदर्शन करना ... 2 तीमु. 4:14; उत्पज़ि 1:15, 17 (थेयर, 213)।

[41]हैंड्रिज़्सन, 325. [42]सामर्थ (यू.: *endunamoo*) – ''... मजबूत बनाना, शज़्ति से सज़्पन्न करना ... फिलि. 4:13; 1 तीमु. 1:12; 2 तीमु. 4:17 ... अप्रतिरोधक रूप में, सामर्थ पाना ... सामर्थ बढ़ना: प्रेरितों 9:22 ... 2 तीमु. 2:1 ... प्रभु के साथ मेल में, इफि. 6:10'' (थेयर, 214)। [43]विलियम बार्कले ने इस पद में पौलुस की टिप्पणियों से भजन संहिता 22 की तुलना की: ''इस पद के विषय में एक विचित्र बात भजन 22 के स्मरणों की संज़्या है। 'तूने मुझे ज़्यों छोड़ दिया ?' 'सब लोग मुझे छोड़ गए।' 'कोई सहायता करने वाला नहीं।' 'मेरे पास कोई न रहा।' 'मुझे सिंह के मुंह से बचा ले।' 'मुझे सिंह के मुंह से निकाला।' 'पृथ्वी के सब दूर दूर देशों के लोग प्रभु की ओर फिरेंगे।' 'जाति जाति के लोग उसकी सुनेंगे।' 'राज्य यहोवा ही का है।' 'वह मुझे अपने स्वर्गीय राज्य के लिए बचाएगा।' यह लगता है कि इस भजन के शज़्द पौलुस के दिमाग में दौड़ रहे थे और अच्छी बात यह है कि क्रूस पर लटकते हुए यीशु के मन में भी इसी भजन के शज़्द थे, ज़्योंकि केवल इसी भजन का आरज़्भ इन शज़्दों से होता है: 'हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे ज़्यों छोड़ दिया ?' और अन्त विजय में होता है (भजन 22:1; मज़ी 27:46)। मृत्यु का सामना करते हुए पौलुस को प्रभु की तरह इसी भजन से सांत्वना और प्रोत्साहन मिला'' (बार्कले, 253–54)। [44]उनेसिफुरुस के सज़्बन्ध में 2 तीमुथियुस 1:16–18 पर दिए गए नोट्स पर ध्यान दें। [45]हैंड्रिज़्सन, 333. [46]इरेनियुस *अगेंस्ट हियरसीज़* 3.3.3.; यूसबियुस *एज़्लेसियेस्टिकल हिस्टरी* 3.4. [47]हैंड्रिज़्सन, 333. [48]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द एपिस्टल्स ऑफ़ पॉल टू द थेस्लोनियंस, टू तिमोथी, टू टाइटस एण्ड टू फिलेमोन* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स, 1845), 237. [49]बार्कले, 219–20.